भजन

तर्ज–कोई पत्थर से ना मारे

सतगुरू बन के आए है हमे जगाने को
भूली आतम को उस घर की याद दिलाने को

1–अपनी रुहों की खातिर आ के ये तन धारा है
उन्हे तो साथ अपनी जान से भी प्यारा है
मेहरबान हैं हम पे कुरबान हैं वो
हमारी शान है वो हमारी जान है वो
दौड़कर आयें है वो अर्श पे ले जाने को

2–हमारी भूल ने ये दुख का खेल दिखाया है
पिया ने झूठ में आ कर हमें आजमाया है
कहां है इश्क तेरा जो कहती मेरा मेरा
इक झलक तो दिखा दो जरा सा तो मुस्कुरा दो
वों चलें आए है हमे होश में ले आने को

3–अब सितम इतना ना ढाओ ये दुआ हमारी है
इश्क की जिद कर ली बस ये ही खता हमारी है
मुझे मत आजमाओ ना अब इतना सताओ
बेबसी है हमारी पिया अब तो छुड़ाओ
खता मेरी है मैं तैयार सजा पाने को